किसान आंदोलन से रिपोर्ट....

यूपी से बेहतर किसान एकजुटता बिहार में

कम्युनिस्टों ने संभाल रखी है कमान, बाकी राजनीतिक दलों का भी समर्थन

वैचारिक मतभेद के बावजूद कम्युनिस्टों के मंच पर पहुंचे योगेंद्र यादव

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली: किसान आंदोलन के संगठित रूप लेने के संकेत मिल रहे हैं। किसानों का मुद्दा अब ज्यादा मुखर हो रहा है। बिहार और यूपी में हाल ही में हुए किसान आंदोलन और किसान सम्मेलन से इसका पता चलता है। लेकिन यूपी के मुकाबले बिहार में किसान आंदोलन ज्यादा संगठित है। यूपी मे वह बात नहीं है। मजदूर मोर्चा ने दोनों राज्यों के किसान आंदोलन पर सूक्ष्म नजर डाली है।

बिहार में किसान आंदोलन के संगठित होने की खास वजह इसका नेतृत्व कम्युनिस्टों के हाथ में होना भी है। बिहार के आरा में अभी 26 अक्टूबर को हुई किसान रैली में सबसे खास बात यह रही कि वैचारिक मतभेद के बावजूद कम्युनिस्ट नेता दूसरे संगठन के लोगों को अपने मंच पर लाने में कामयाब रहे। जैसे भाकपा-माले के राष्ट्रीय महासचिव दीपंकर भट्टाचार्य, अखिल भारतीय किसान सभा के महासचिव हन्नान मोला, स्वराज्य अभियान और अखिल भारतीय किसान संघर्ष समन्वय समिति के नेता योगेंद्र यादव और अखिल भारतीय किसान महासभा के महासचिव राजाराम सिंह। इन सभी का एक मंच पर जुटना किसान आंदोलन की दिशा में महत्वपूर्ण घटनाक्रम है।

हालांकि जिस मौके पर यह लोग बिहार के आरा में जुटे थे वह था किसान आंदोलन के शिल्पकार और सामाजिक बदलाव के महानायक रामनरेश राम की आठवीं बरसी पर आयोजित भाजपा भगाओ, किसान बचाओ रैली।

किसानों पर बुलेट और बुलडोजर

दीपांकर भट्टाचार्य ने इस रैली में काफी महत्वपूर्ण बातें कहीं जिनका समझा जाना और पढ़ा जाना महत्वपूर्ण है। किसानों को संबोधित करते हुए दीपंकर भट्टाचार्य ने कहा कि इस देश की जनता को एक बार सरकार का चरित्र समझ में आए जाए, तो फिर लड़ाई में उन्हीं की जीत होती है। केंद्र की भाजपा सरकार के चरित्र को लोगों ने अब बखूबी समझ लिया है। यह सरकार किसानों को अपने रास्ते का रोड़ा समझती है। बुलेट ट्रेन का जोर-शोर से प्रचार करने वाली यह सरकार वास्तव में किसानों पर बुलेट और बुलडोजर चला रही है। बुलेट ट्रेन लाने की आड़ में किसानों की जमीन हड़पी जा रही है।

दीपंकर ने कहा कि 2014 में केंद्र में जो सरकार बनी, वह एक गिरोह द्वारा सत्ता पर कब्जा था। वह इस देश के लिए एक हादसा था। प्रधानमंत्री मोदी अंबानी-अडानी के व्यावसायिक सौदे तय करने के लिए विदेश दौरे कर रहे हैं। राफेल के मामले में भी यह बिल्कुल स्पष्ट है। यह एक महाघोटाला है, जिसके लिए प्रधानमंत्री सीधे तौर पर दोषी हैं। देश में जो भ्रष्टाचार निरोधक कानून है उसके तहत उन्हें जेल में होना चाहिए। लेकिन इस देश में जो भी नियम-कानून थे, उसकी इस सरकार को कोई परवाह नहीं है। आज बुलडोजर सिर्फ खेत-खलिहान, झुग्गी झोपड़ी, व्यवसाय पर ही नहीं चल रहा, बल्कि लोकतंत्र और आजादी पर भी चल रहा है। इसलिए हम भाजपा को भगाने की बात कर रहे हैं।

राजद से एकजुटता मंजूर

दीपांकर ने एक बहुत खास बता कही जो बिहार में होने वाले अगले लोकसभा और विधानसभा चुनाव के मद्देनजर बहुत खास है। संकेत मिल रहा है कि भाजपा के खिलाफ व्यापक एकजुटता की लेफ्ट ने पूरी तैयारी कर ली है।

दीपंकर ने कहा कि हादसे से निबटने के लिए तुरंत एकजुटता की जरूरत होती है। भाजपा के विरुद्ध राजद, माले या अन्य दलों के बीच एकजुटता की संभावना को इसी रूप में देखा जाना चाहिए। यह बेहद खतरनाक समय है। कुछ पूंजीपतियों ने पूरे देश पर कब्जा कर लिया है और भाजपा की सरकारें उनके फायदे के लिए कुछ भी करने को तैयार है। किसान अपनी मांगों को पूरा करने के लिए आंदोलन करते हैं तो सरकार कहती है कि पैसे नहीं है, जबकि पूंजीपतियों को हजारों करोड़ के कर्जे माफ कर देती है। विजय माल्या समेत कई लोग देश के बैंकों का पैसा खाकर भाग जाते हैं और इस सरकार के मंत्री उनके भागने में मदद करते हैं।

दीपंकर ने कहा कि बिहार ने पहले ही भाजपा को बाहर करने का जनादेश दिया था, पर नीतीश कुमार ने विश्वासघात किया। जिनके खिलाफ माहौल बनाकर जीते थे, उन्हीं के साथ मिल गए। बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, किसानों की जमीन, पानी, खाद, बीज, मकान, बच्चों की पढ़ाई, महिलाओं की सुरक्षा, वृद्धों के पेंशन आदि सवालों का जवाब भाजपा की सरकार के रहते न मिलेगा। भाजपा एक ओर पूंजीपतियों के फायदे के लिए पूरे देश की जनता को तबाह कर रही है, वहीं केंद्र में उसकी सरकार बनने के बाद महिलाओं, अल्पसंख्यकों, दलितों और आदिवासियों पर हमले बढ़े हैं। बिहार में भी नीतीश-मोदी की जोड़ी के सत्ता पर काबिज होने के बाद दलितों और स्त्रियों पर हमले बढ़े हैं। ऐसा इसलिए हुआ है कि ये सरकारें देश को हिंदू राष्ट्र बनाने पर तुली हुई है, जिसकी परिकल्पना मनुस्मृति पर आधारित है। मनुस्मृति के आधार पर देश को चलाया जाएगा, तो दलितों-महिलाओं पर हमले बढ़ेंगे ही। बाबा साहब अंबेडकर ने बहुत पहले ही इसीलिए हिंदू राष्ट्र को देश के लिए खतरनाक बताया था।

भीम आर्मी के नेता चंद्रशेखर आजाद रावण को एक साल तक राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहज गिरफ्तारी पर सवाल उठाते हुए दीपंकर ने कहा कि चंद्रशेखर दलितों के स्वाभिमान की बात उठाते हैं, क्या इसीलिए वे राष्ट्र की सुरक्षा के लिए खतरनाक हैं? आखिर दलित का स्वाभिमान किस राष्ट्र के लिए खतरनाक है? वास्तव में भाजपा-आरएसएस हिंदू राष्ट्र के नाम पर देश और को बांटने-तोड़ने और बर्बाद करने में लगे हुए हैं। इन्हें हर हाल में सत्ता और राजनीति से बाहर करने की जरूरत है।

कृषि विरोधी सरकार

हन्नान मोला ने कहा कि खेती के साथ कुछ समस्याएं नहीं हैं, बल्कि पूरी खेती ही संकट में है। इसके लिए सरकार की नीतियां जिम्मेवार हैं, जो कृषि विरोधी हैं। मोदी के सत्ता में आने के बाद संकट ज्यादा बड़ा है। मोदी किसानों के दुश्मन हैं, उनके खिलाफ आवाज उठाना, कृषि विरोधी नीतियों को बदलने के लिए एकजुट होना देश के किसानों का फर्ज है। उन्होंने कहा कि भाजपा सांप्रदायिक है और कारपोरेट के पक्ष में है, वह जनवाद और संविधान की दुश्मन है, लोकतंत्र और आपसी भाईचारा बचाने के लिए उसे शिकस्त देना जरूरी है।

किसान विरोधी पीएम टिक नहीं पाएगा

स्वराज्य अभियान और अखिल भारतीय किसान संघर्ष समन्वय समिति के नेता योगेंद्र यादव ने सरकार के दावे और खेती-किसानी की हकीकत की तुलना करते हुए रैली में शामिल हजारों किसानों से हाथ की पांचों उंगलियों को खोलने को कहा और एक-एक कर भाजपा सरकार की पहचान धोखेबाज, झूठी, निर्दयी, डकैत और हत्यारी के रूप में कराया। उन्होंने पांचों अंगुलियों को समेटते हुए मुट्ठी बंदकर भाजपा के खिलाफ संघर्ष का संकल्प लेने को कहा।

उन्होंने कहा कि मोदी सरकार देश कि इतिहास में अब तक की सबसे बड़ी किसान विरोधी सरकार है। इसने फसलों के लिए तय सरकारी कीमत पर किसानों अनाज को नहीं खरीदा। डीजल, खाद, बिजली का दाम बढ़ा दिया और झूठा प्रचार किया कि किसानों की आय दुगनी हो गई है। इस निर्दयी सरकार ने प्राकृतिक आपदाओं के समय भी किसानों की मदद नहीं की, बल्कि बीमा कंपनियों को 470 करोड़ का फायदा पहुंचाया। यह सरकार लगातार किसान विरोधी कानून बनाने और उन्हें लागू करने की कोशिश कर रही है। इसने फसल की कीमत मांगते किसानों को मंदसौर में गोली चलाकर मार डाला। आज देश के संसद के बाहर किसान सड़कों पर इस सरकार के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं। मोदी पर किसान विरोधी होने का ठप्पा लग चुका है, किसान विरोधी होकर इस देश में कोई प्रधानमंत्री नहीं रह सकता। इस सरकार को जाना ही होगा। उन्होंने सावधान करते हुए कहा कि भाजपा फिर हिंदू-मुसलमान के मुद्दे को उछालेगी, हमें जवान और किसान के मुद्दों को उठाना होगा। बता दें कि वैचारिक मतभेद के बावजूद योगेंद्र यादव कम्युनिस्टों के मंच पर पहुंचे। उन्होंने जाने से पहले ट्वीट भी किया था कि वैचारिक मतभेद के बावजूद मैं आर की किसान रैली में जाऊंगा। यह सुखद शुरुआत है।

यूपी का किसान आंदोलन

यहां संक्षेप में... हाल ही में टिकैत परिवार पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को एकजुट कर दिल्ली के लिए चला। पश्चिमी यूपी में पिछले कुछ वर्षों से किसान आंदोलन कमजोर पड़ गया था। जब तक महेंद्र सिंह टिकैत जिंदा थे, तब तक किसानों का जबरदस्त प्रेशर ग्रुप बना हुआ था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश का किसान जो मुख्य रूप से जाटों और मुसलमानों की आबादी का पूरा हिस्सा है, वह महेंद्र सिंह टिकैत के समय में मजबूती से एकजुट था। ज्यादातर का झुकाव चौधरी चरण सिंह और बाद में अजित सिंह के साथ रहा। महेंद्र सिंह टिकैत की मौत के बाद भाजपा ने जाटों और किसानों की एकता को छिन्न भिन्न कर दिया। मुजफ्फरनगर समेत तमाम जगहों पर दंगे कराए गए और नतीजा यह निकला की दोनों बिरादरी एक दूसरे से दूर हो गई। लेकिन टिकैत के बेटों नरेश टिकैत और राकेश टिकैत को अब समझ आया कि एकजुट रहेंगे तो सारे नेता और पार्टियां उनके चक्कर काटेंगी। कैराना लोकसभा उपचुनाव में जाट-मुसलमानों ने मिलकर भाजपा की नफरत की राजनीति को करारा जवाब दिया। इस नतीजे के फौरन बाद नरेश टिकैत ने गांव-गांव जाकर किसानों को एकजुट किया और दिल्ली के लिए चल पड़े। बॉर्डर पर रोका गया, जहां किसानों पर लाठियां बरसी और आंसू गैस के गोले छोड़े गए। उनके साथ ऐसा बर्ताव किया गया जैसे किसान नहीं अपराधी हों। लेकिन अचानक किसान नेताओं ने अपना आंदोलन स्थगित किया और वापस लौट गए।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश या यह कहिए कि टिकैत परिवार के नेतृत्व में चलने वाला किसान आंदोलन कभी अपने अंजाम तक नहीं पहुंच पाता और उससे पहले खत्म हो जाता है। यही महेंद्र सिंह टिकैत के वक्त होता था और यही इस बार भी हुआ। दरअसल, अगर किसान आंदोलन किसी सरकार को झुकाने या अपनी ताकत दिखाने की आड़ में राजनीतिक सौदेबाजी के लिए चलेगा तो कभी भी अंजाम तक नहीं पहुंच पाएगा। गन्ना भुगतान न होना उत्तर प्रदेश के किसानों की सबसे बड़ी समस्या है। गन्ने की फसल के इर्दगिर्द उनकी पूरी आर्थिक स्थिति घूमती है लेकिन उसी मुद्दे को लेकर टिकैत की भारतीय किसान यूनियन कभी गंभीर नहीं रही। ज्यादा से ज्यादा ये लोग प्रदर्शन कर देंगे, गन्ना जला देंगे, दिल्ली तक आने के बाद आंदोलन खत्म कर देंगे। इस तरह तो कोई आंदोलन नहीं चला करते। उत्तर प्रदेश का किसान खुद अपने मुद्दों से अनभिज्ञ है। टिकैत खानदान भी उसे सही दिशा नहीं दे पा रहा है। चूंकि यहां कम्युनिस्ट नेतृत्व का अभाव है इसलिए आंदोलन में बिखराव है। बेहतर तो यह है कि कम्युनिस्ट नेतृत्व बाकायदा इस पर काम करे और टिकैत परिवार को इस बारे में बाकायदा प्रशिक्षित करे। वहां कम्युनिस्टों को नई किसान लीडरशिप खड़ी करने पर भी ध्यान देना चाहिए।

महान अक्तूबर क्रांति की 101 वीं वर्षगांठ पर विचार गोष्ठी

विषयः-अक्तूबर क्रांति की विरासत और भारत का मज़दूर आंदोलन

वीरवार, 8 नवम्बर 2018
दोपहर 3 से 6 बजे
सामुदायिक भवन,
आज़ाद नगर
सेक्टर 24 फ़रीदाबाद